डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन /2003/9899
प्रकाशन दिनांक : 4 जनवरी - 2007 . मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - चार | अंक - नौवाँ | जनवरी-2007 | मासिक पत्रिका

3

नाम की खुश्बू

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा
गुफा दर्शनों के समय महत्त्वपूर्ण सन्देश
6 दिसम्बर - 1986

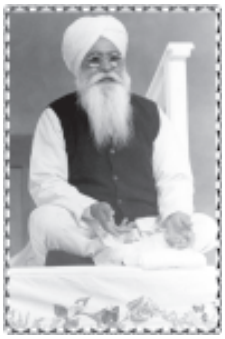

7

पूर्ण गुरु

[गुरु नानकदेव जी की बानी]
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस. राजस्थान 30 मार्च -1996

29

स्वप्न

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब
15 नवम्बर - 1992

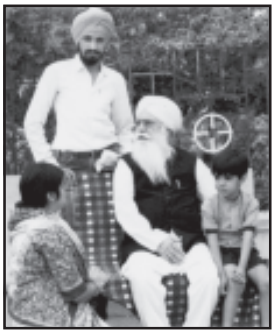

32 धन्य अजायब

सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

प्रकाशक व सम्पादक	प्रेम प्रकाश छाबड़ा
विशेष सलाहकार	गुरमेल सिंह नौरिया
सह सम्पादिका	नन्दिनी
सहयोग	रेनू सचदेव परमजीत सिंह
पृष्ठ डिजाइनिंग	राजेश कुक्कड़
दिल्ली में प्राप्त करने का स्थान	श्री सुरेश चोपड़ा 28 बेहरा इनकलेव पश्चिम विहार नई दिल्ली - 110 041 फोन 9818-201999
मुम्बई में प्राप्त करने का स्थान	रेवती सिनकर सी-304 महात्रे प्लाझा महात्मा गांधी रोड डहाणूकर वाडी कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई - 400 067 फोन 28-628626
स्वत्वाधिकारी व मुद्रक	प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर -335 001 से प्रकाशित किया। फोन 0154-246 4601 मोबाइल 94144-80303
e-mail	dhanajaibs@yahoo.co.in
Website	www.ajaibbani.org

सन्त बानी आश्रम

गांव व डाकखाना - 16 पी.एस. **वाया -** मुकलावा

तहसील - रायसिंहनगर - 335 039, **जिला -** श्री गंगानगर (राजस्थान)

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय महत्त्वपूर्ण सन्देश

नाम की खुशबू

6 दिसम्बर–1986 | *16 पी.एस. आश्रम राजस्थान*

आपने इस जगह के मुत्तलिक काफी कुछ पढ़ा और सुना है। किसी भी जगह की महानता इसलिए होती है कि वहाँ किसी पवित्र आत्मा ने अपने गुरुदेव की दया से अपने गुरु का हुक्म मानकर वह काम किया होता है कि चौरासी लाख योनियाँ भुगतने के बाद इन्सानी जामा मिलता है। हम इन्सानी जामें का फायदा तभी उठा सकते हैं अगर हम इस जामें में प्रभु भक्ति करें; क्योंकि हम यह कार्य किसी दूसरे जामें में नहीं कर सकते।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''उस मालिक के प्यारे के बहुत अच्छे भाग्य होते हैं जो गुरु के चरणों से अपनी लिव लगा लेता है।'' वह बहुत सुहावना समय था जब मेरे गुरुदेव ने मुझ पर दया करके मुझे इस गुफा में बिठाया। यह जगह आपके हुक्म से बनाई गई। यह आपकी दया ही थी कि जब आपने मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''अंदर देखना है, तुझे मेरे पास आने की जरूरत नहीं। मैं ही तेरे पास आऊँगा।''

हजूर कृपाल ने पच्चीस साल होका देकर कहा, ''यह तो लेने वाले की इच्छा है, देने वाले का क्या कसूर है?'' यह हमारी अपनी भावना पर निर्भर है। जब इस गरीब आत्मा को उस शहनशाह के दर्शन हुए तब आत्मा को यह समझ आई कि तुझे कुछ देने वाला आ गया है।

बचपन से ही मुझे सन्तों की बानी से प्यार और गुरबानी पढ़ने का शौंक था। मेरे दिल में यह चाह थी कि मुझे परमात्मा का बनाया हुआ ऐसा शाह मिले ! जो 'नाम' का खजांची हो।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर धनी के घर गरीब चला जाए तो धनी दूसरी तरफ मुँह कर लेता है कि यह मुझसे कुछ माँगेगा ! अगर

गरीब के घर धनी चला जाए तो गरीब उसका आदर-सत्कार करता है।'' परमात्मा की कला को परमात्मा ही जानता है। हम अपने कर्मों के अनुसार ही इस संसार में गरीब-अमीर बनकर आते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

कहत कबीर निर्धन है सोई, जाके हृदय नाम न होई।

दो दिन पहले यह भजन बोला गया था, ''*सावन शाह तो लैके भिछिया झोलियाँ भरदा खाली।*'' महाराज सावन 'नाम' के शाह थे। हुजूर कृपाल ने उनसे दुनिया की नहीं 'नाम' की भिक्षा माँगी। वह भिक्षा इतनी बड़ी थी कि जिसने उनसे जो माँगा उन्होंने उसकी खाली

झोली भर दी लेकिन हमारी झोली तो पहले ही दुनिया के सामान से भरी हुई है, भरने वाला इसे कैसे भरेगा?

जिसने उनसे दुनिया की चीजें माँगी, उन्होंने उसे दुनिया की चीज़ें दी। जिस आशिक ने उनका दीदार माँगा, उसे दीदार मिल गया। मैंने उनसे कभी यह नहीं कहा, ''तू मुझे दुनियावी सुख दे या मुझे कभी बीमार मत करना।'' यह उनकी मर्जी है वह हमें दुःखी रखे या सुखी रखे। जब हमने अपना आप उन्हें सौंप दिया तो उन्हें हमारी फिक्र है।

मैंने सारे संसार में जाकर यही होका दिया, ''प्यारेयो ! मैंने अपने गुरु से कोई दुनियावी चीज़ नहीं माँगी। मैंने बचपन से गुरु माँगा था, मुझे गुरु मिल गया अगर हम गुरु से गुरु को माँगते हैं तो गुरु सारी बरकतें लेकर हमारे अंदर बैठ जाता है और हमारी सब जरूरतें पूरी करता है।''

आप यहाँ से यह प्रेरणा लेकर जाएं कि हमारे ऊँचे भाग्य थे तभी हम परमात्मा के चुनाव में आए। गुरु परमात्मा ने संसार में शान्ति बनाए रखने का बीड़ा उठाया होता है। हमारा भी फर्ज बनता है कि हममें से **'नाम' की खुश्बू** आए अगर एक सतसंगी सौ लोगों का सुधार करे तो देश के कितने ही लोगों का सुधार हो सकता है?

प्यारेयो ! मैंने देखा है कि पहले भारत के लोग बीड़ी, चाय और शराब नहीं पीते थे। जब देश आजाद हुआ तो इन चीज़ों को बनाने वालों ने गाँव-गाँव जाकर मुफ्त में बीड़ी, चाय और शराब बाँटी। जब लोग इन चीज़ों के आदी हो गए तो उन्हें बताया गया कि अब आप ये चीज़ें बाजार से खरीद सकते हैं।

अगर इसी तरह सतसंगी अपने में से **नाम की खुश्बू** और लोगों में फैलाए कि मेरा फायदा हुआ है। तेरी समझ में आता है तो तू भी फायदा उठा सकता है। सोचकर देखें ! कितनी दुनिया का सुधार हो सकता है?

U U U

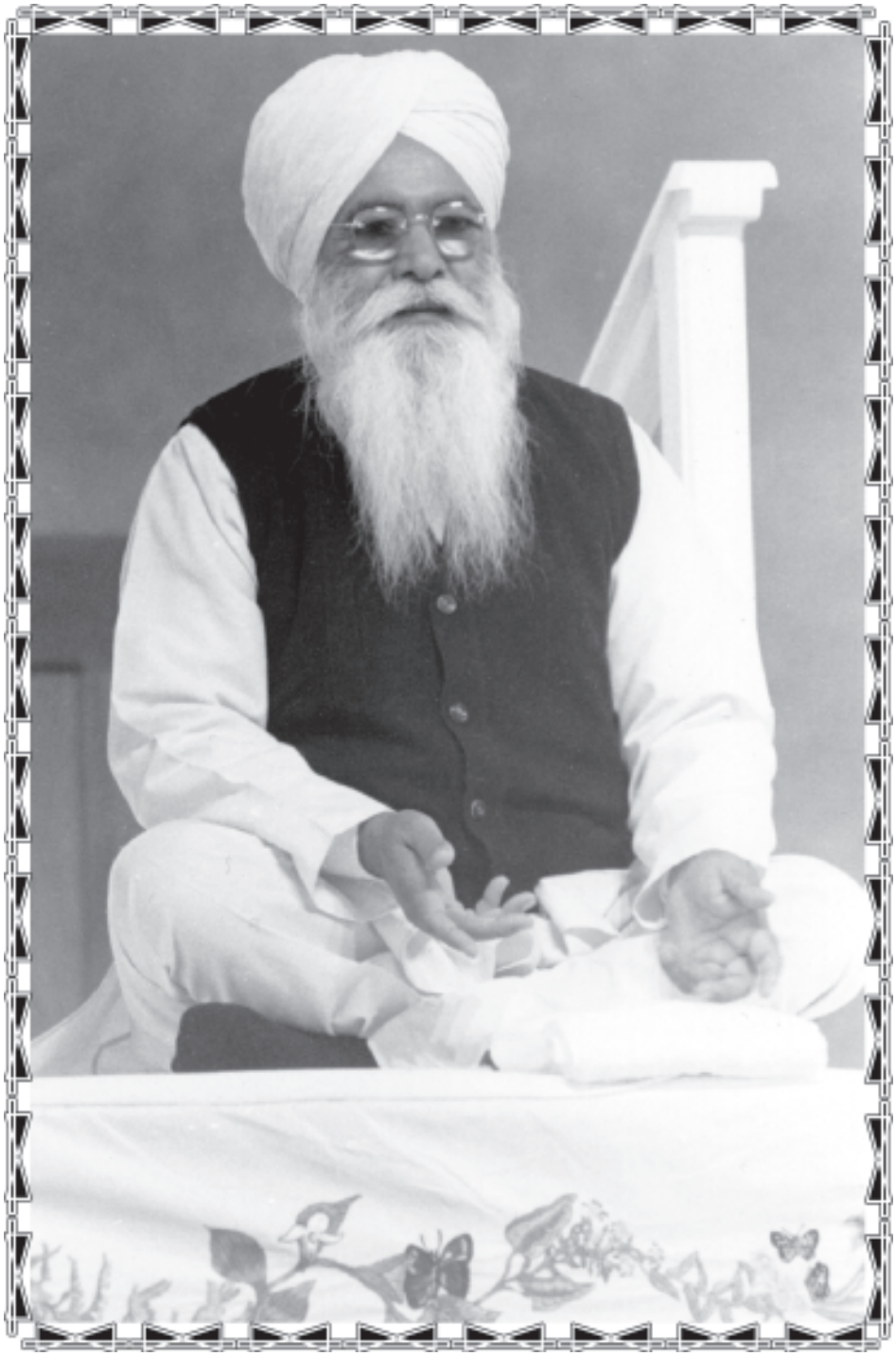

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

पूर्ण गुरु

16 पी.एस. राजस्थान 30 मार्च –1996 | *गुरु नानकदेव जी की बानी*

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है। हम सच्ची नमस्कार और सच्चा धन्यवाद तभी कर सकते हैं जब हम नौं द्वारे खाली करके सच्चखंड से उठ रही आवाज - 'शब्द' के साथ जुड़ जाते हैं। वहाँ पहुँचकर **पूर्ण गुरु** के लिए दिल में इज्ज़त पैदा होती है अगर कोई महात्मा की सिफत कर दे तो हम भावुक हो जाते हैं कि यह बहुत अच्छा महात्मा है और अगर दो आदमी महात्मा की निन्दा कर दें तो हम उससे अपना भरोसा खत्म कर लेते हैं। लेकिन सच्चा प्यार और सच्चा भरोसा तभी होता है जब हम अंदर जाकर सच्चाई को अपनी आँखों से देख लेते हैं।

आप जानते हैं कि सूर्य संसार के हर जीव-जंतु को प्रकाश देता है लेकिन उल्लु सूर्य के प्रकाश को नहीं देख सकते। यह उल्लु के अपने बस की बात नहीं; कुदरत ने उसकी आँखें ही इस तरह की बनाई हैं। इसलिए *मनमुख* को उल्लु कहा गया है। महात्मा चतुरदास कहते हैं:

ईक दिन सभा उल्लुआं लाई, बैठे मिल नर नारी जी।
कोई आखे सूरज नाहीं, कौन करे उजयारी जी॥
बारो बारी सभ्भे बोले, कर कर सोच विचारी जी।
उन्हां विच ईक वड्डा उल्लु, बानी ओस विचारी जी॥
अज तक सूरज हम नहीं डिट्ठा, वड्डी उम्र हमारी जी।
एक हँस टीसी पर बैठा, बानी ओस उचारी जी॥
है प्रभात देख लो सारे, लक्खां किरन पसारी जी।

एक बार *मनमुखों* की सभा लगी हुई थी। वे सब यही कह रहे थे कि इस दुनिया को बनाने वाला कोई परमात्मा है ही नहीं। हमने बहुत ग्रन्थ पढ़े हैं अगर परमात्मा होता तो हमें जरूर मिलता। जिसने दुनिया

के इल्म की खोज कर ली लेकिन अपने अंदर की खोज नहीं की वह *मनमुख* है। गुरु नानकदेव जी मिसाल देकर समझाते हैं, ''जिस तरह कड़छियाँ हलवे में घूमती हैं लेकिन हलवे के स्वाद से वंचित रहती हैं। इसी तरह ज्ञानी पंडित ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं, लोगों को आदेश देते हैं लेकिन खुद नहीं समझते।''

गुरुमुख अपनी आँखों से परमात्मा के दर्शन करता है और हमें कहता है, ''प्यारेयो ! अपनी आँखें बाहर से बंद करके अंदर की तरफ खोलें, खुद सच्चाई को देखें। परमात्मा हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, इसाई, पढ़े-लिखे और अनपढ़ सभी का है।''

सन्त जब भी संसार में आते हैं चुप करके अपना समय बिताते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग कौडियों का व्यापार करके खुश होते हैं अगर उन्हें हीरों के व्यापार के बारे में बताया जाए तो वे गुस्सा करते हैं।'' गुरु नानकदेव जी भी कहते हैं:

चुप रहा तां आखिए, ऐह घट नाहीं मत।

आप कहते हैं, ''अगर मैं चुप रहता हूँ तो लोग कहते हैं कि इसे कुछ नहीं आता अगर बोलता हूँ तो कहते हैं कि क्या बोलता रहता है अगर बैठता हूँ तो कहते हैं कि क्या कोई मर गया है जो रोज चौंकड़ी लगाकर बैठा रहता है? सन्तों के लिए कोई जगह है जहाँ वे अपना समय बिताएं !''

काई गली न आवई, कित्थे कढ़ा झट।
एत्थे ओत्थे नानका करता रखे पत॥

आप कहते हैं कि दुनिया जो भी कहती है कहने दें, आप अपना रास्ता न छोड़ें। आप तो जानते हैं कि परमात्मा हमारे अंदर है। सन्त न कोई नई कौम बनाते हैं और न पहले की बनी तोड़ते हैं। सन्त हमें बड़े प्यार से बताते हैं कि हमारे और परमात्मा के बीच मन ही रुकावट है। मन ब्रह्म की अंश है। यह मन काल का एजेन्ट है। इसने बड़े-बड़े ऋषियों-मुनियों को हड्डियों का ढेर कर दिया।

काल को तो अंदर जाकर ही देखेंगे ! तब पता चलेगा कि यह कितना विशाल है। जब कोई परमात्मा की भक्ति करने लगता है तो मन अपने सब हथियार लेकर उसके पीछे लग जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ; पच्चीस प्रकृतियाँ; सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण ये सब मन के हथियार हैं। आत्मा एक है और इसके अनेकों दुश्मन हैं। आशा, तृष्णा मन की फौजें हैं।

सन्त इस संसार में मन को समझाने का संदेश लेकर आते हैं। वे कहते हैं, ''प्यारेया ! तेरा घर ब्रह्म है। वह सुख और शान्ति का देश है अगर तू अपने घर चला जाए तो शान्ति से रह सकेगा।'' हम पढ़-लिखकर मन को नहीं समझा सकते। ऋषि-मुनी बहुत सूरमें थे उन्होंने कई-कई साल कठिन तपस्याएं की। साधना करना बहुत मुश्किल है, भूख-प्यास सहनी पड़ती है। मैंने भी अपनी जिंदगी में बहुत साधना की हैं। हम एक घंटा अभ्यास में बैठते हैं तो कितनी शिकायतें करते हैं।

ऋषियों-मुनियों को **पूर्ण गुरु** नहीं मिला जो उन्हें पूरा भेद बता सकता, अंदर उनकी मदद कर सकता कि मन को कैसे बस में करना है? मन को बस में करने की दवाई क्या है? हम जानते हैं कि सर्प में जहर होता है। सर्प जिस इंसान को अपना मुँह लगा दे उसे मौत का टिकट दे देता है।

सपेरे लोग सर्प की कमजोरी जानते हैं, वे ऐसा राग अलापते हैं जिस पर सर्प मस्त हो जाता है। सर्प के दाँतों पर बूटी लगाकर उसके दाँत खट्टे कर देते हैं, बाद में उन दाँतों को निकाल देते हैं। वह सर्प सदा के लिए Harmless हो जाता है। फिर सपेरे सर्प की जहर वाली थैली निकालकर सर्प को अपने गले में डालकर घूमते हैं। जहर में बहुत तपिश होती है इसलिए सर्प उस तपिश को दूर करने के लिए चंदन के पेड़ से लिपटता है।

हमारे अंदर सर्प रूपी मन है। हम मन के जहर को ठंडा करने के लिए भोग भोगते हैं। भोग भोगने से और आग भड़कती है।

सन्त हमें बताते हैं कि मन लज़्ज़त का आशिक है। इसे दुनिया में शराब-कबाब और विषयों की लज़्ज़तें ही खींचकर लाई हैं अगर हम इसे 'शब्द-नाम' की लज़्ज़त दे दें तो मन अपने आप ही काबू में आ जाता है, इसका दृष्टिकोण ही बदल जाता है। जैसे भिखारी कौडियाँ माँगता फिरता है कोई उसकी दिन भर की कमाई छीने ! वह मरने-मारने के लिए तैयार हो जाता है अगर हम उसके हाथ में नोट या डालर रख दें तो उसका हाथ अपने आप ही ढीला हो जाता है।

मैंने एक पागल (सुंदरदास) के साथ बीस साल बिताए हैं। वह महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा था। उससे कत्ल हो गया था, वह पागलों की तरह फिरता रहता था। जिस दिन उसका मिलाप मेरे साथ हुआ उसने मुझे नमस्कार किया और कहा, ''मुझे शान्ति आ गई है।''

दिमाग में गंदा खून इकट्ठा हो जाने से पागलपन हो जाता है। पंजाब के प्रेमी जानते हैं कि बठिंडा में तपेवाले पागलों के लिए अच्छी दवाई देते हैं। यह दवाई चालीस दिन खिलाने से पागलपन ठीक हो जाता है। मैंने सुंदरदास के लिए नए कपड़े सिलवाए और प्रेम-प्यार से उसका इलाज किया। वह पहले विरोध करता था लेकिन जब ठीक हो गया तो मेरी सिफ्त करते हुए कहने लगा, ''मेरे सिर पर हाथ रखें।''

हमारे पिछले परिवार का सम्बन्ध राजा कर्ण से है। बहुत लोग जानते हैं कि राजा कर्ण दानी था लेकिन हम लोग राजा कर्ण के दानी होने का अहंकार करते हैं। मुझे अफसोस है कि हम लोग शराब पीकर कहते हैं कि हम राजा कर्ण के पौत्र हैं। हमारा भी फर्ज बनता है कि हम अपने बुजुर्गों जैसे बनें।

इसी तरह हमारा मन विषय-विकारों के जंगल में पागल हुआ फिरता है। जब हम अभ्यास में बैठते हैं तो यह शुरू-शुरू में विरोध करता है। कभी हमारे अंदर गमी तो कभी खुशी लाता है। बैठे-बैठे हजारों मील दूर ले जाता है। इस मन के साथ सघंर्ष करना पड़ता है।

महाराज जी कहा करते थे, ''यह मन रोए या पीटे ! आप इसे अभ्यास में अवश्य बिठाएं। जब हम रोज-रोज अभ्यास में बैठते हैं आखिर यह मन अंदर जाता है तो इसे 'शब्द का रस' मिलता है। जब स्थूल दुनिया में जाते हैं तो स्थूल ताकतें तंग करती हैं। सूक्ष्म में जाते हैं तो सूक्ष्म भोग घेर लेते हैं, वहाँ बहुत संघर्ष करना पड़ता है लेकिन जिसका **गुरु पूर्ण** है वह उसकी मदद करता है। आप अंदर जाकर देखें।''

कई प्रेमी पत्र लिख देते हैं कि महाराज जी ! पर्दा खोलें। प्यारे यो! 'शब्द' पार्सल नहीं है। बच्चा स्कूल जाएगा तो ही टीचर उसे पढ़ाएगा। हमारा स्कूल दोनों आँखों के बीच *तीसरा तिल* है। यहाँ हमारा शब्द-रूप गुरु बैठा है। यहाँ तक पहुँचना शिष्य की ड्यूटी है। टीचर लापरवाही नहीं करता अगर बच्चा घर में बैठकर प्रार्थनाएं करे स्कूल न जाए तो क्या वह पास होने की उम्मीद कर सकता है ?

जब हम सूक्ष्म और कारण छोड़कर ब्रह्म के शिखर तक पहुँचते हैं तो मन को अपने घर पहुँचकर शान्ति आ जाती है। जो मन हमें बाहर ले जाता था फिर यही मन हमें अभ्यास में बैठने के लिए उकसाता है। दुनिया की सोच छोड़ देता है। जब इसे अच्छे-अच्छे रस मिलते हैं तो यही मन हमारे पीछे-पीछे घूमता है।

हम जन्म-जन्मांतरों से परमात्मा को भूले हुए हैं और नशों से अपना तन खराब कर रहे हैं। कालीदास ने कहा था, ''क्या किसी ने जुए, शराब और अफीम से कोई नफा वसूल किया है? इनसे हमारे तन, धन का नुकसान होता है और दुनिया में अपयश भी होता है।'' हमें किसी सन्त-महात्मा के चरणों में जाकर अंदर जाने की युक्ति प्राप्त करनी चाहिए। उनकी बताई हुई हिदायतों पर चलना चाहिए अगर हम उनके कहने पर कुछ दिन अभ्यास करेंगे तो तरक्की करेंगे।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हम डाक्टर से दवाई लाकर उसका इस्तेमाल न करें, उसे अलमारी में रख दें तो हम ठीक नहीं हो सकते। डाक्टर दवाई देता है परहेज बताता है लेकिन

मरीज की बीमारी नहीं लेता। जो लोग डाक्टर के कहे मुताबिक दवाई खाते हैं परहेज करते हैं वे ठीक हो जाते हैं।''

गुरु साहब कहते हैं, ''ऐ भूले मन ! तू बाहर से शराबों-कबाबों के रसों को छोड़ेगा तो ही अंदर जाएगा।'' सन्त चरणों पर झुकने के लिए सख्त मना करते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर किसी ने कुछ प्राप्त करना है तो साधु की आँख और माथे की तरफ देखें। कबीर साहब कहते हैं:

साधु का निरख आँख और माथा।
सत का नूर रहे नित साथा॥

अगर आप सत्य का प्रकाश देखना चाहते हैं तो साधु की आँखों में ध्यान टिका लें। आप पश्चिम के प्रेमियों को सतसंग सुनते हुए देखते हैं, उनकी लकीर के फकीर वाली कहानी है। उनका सन्तमत की तरफ तैयार होना मुश्किल होता है। उन्होंने जिंदगी में बहुत नशे किए होते हैं। उनके लिए बात को समझना भी मुश्किल होता है लेकिन जब उन्हें बात समझ आ जाती है तो वे भटकते नहीं।

मैं पंजाबी भाषा में सतसंग करता हूँ, आप सबको यह भाषा समझ आती है फिर भी कोई इस तरफ मुँह करता है तो कोई उस तरफ मुँह करता है। पश्चिम के प्रेमियों को मेरी भाषा समझ नहीं आती फिर भी वे बिल्कुल नहीं हिलते, इधर-उधर नहीं देखते चाहे उनकी पीठ पर साँप ही क्यों न चढ़ जाए।

पिछले साल अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम था। पश्चिमी प्रेमियों का एक दिन शब्द बोलने का, एक दिन सतसंग का और एक दिन सवाल-जवाब का कार्यक्रम होता है। उन्होंने सवाल-जवाब के दिन कहा कि हमारा कोई सवाल नहीं है। हम विनती करते हैं कि आज आप हमें बैठकर सिर्फ अपने दर्शन करने दें।

हम हिन्दुस्तानी आते ही पैरों में गिरते हैं। जब मैं पहली बार बैंगलोर गया तो मेरे पास दो-तीन आदमी खड़े किए गए थे क्योंकि वहाँ

के लोग उल्टे होकर पैरों में गिरते हैं। यह सन्तमत का तरीका नहीं। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''नौं द्वारों को खाली करके आँखों के पीछे नूरी प्रकाश तक पहुँचें।'' तुलसी दास जी ने रामायण में इन चरणों की बहुत महिमा गाई है।

सुणि मन भूले बावरे गुर की चरणी लागु॥
हरि जपि नामु धिआइ तू जमु डरपै दुख भागु॥

आप कहते हैं, ''यमों का नाम सुनकर आत्मा काँप उठती है। हम कह लेते हैं कि पढ़-लिखकर या किसी और तरीके से या किसी भाई से दस रुपये की अरदास करवाकर यमों से बच जाएंगे; यह हमारी भूल है। हमने यमों से डरना नहीं, यमों को डराना है। नाम एक ताकत है। 'नाम' कण-कण में व्यापक है। 'नाम' इन आँखों से देखा नहीं जाता, कानों से सुना नहीं जाता। जुबान उस 'नाम' को अदा नहीं कर सकती।''

दूखु घणो दोहागणी किउ थिरु रहै सुहागु॥

गुरु नानक देव जी बड़ी अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं, ''एक दिन पति-पत्नी का बिछोड़ा हो जाता है। पति विदुर हो जाता है या पत्नी विधवा हो जाती है। पति तो फिर भी रोता-चीखता इधर-उधर समय व्यतीत कर लेता है लेकिन जो औरतें विधवा हो जाती हैं उनकी कहानी सुनकर देखें; उन्हें बहुत दुःख सहने पड़ते हैं। उनके दुःख बयान नहीं किए जा सकते; यह उनके कर्म हैं।''

इसी तरह हमारा पति परमात्मा हमसे बिछुड़ा हुआ है, हमारी आत्मा भी दुहागण है; जहाँ जन्म लेती है वहाँ दुःख और मुसीबतें ही हैं। हमें जो थोड़े बहुत सुख नजर आते हैं, नहीं जानते कि ये सुख कब दुःखों में तब्दील हो जाएंगे ! जो हमें सुखी दिखाई देते हैं उनकी कहानी सुनकर देखें ! किसी को कर्जा लेने तो किसी को कर्जा देने का दुःख है। किसी की पत्नी बिलख रही है तो किसी का पति बिलख रहा है। सतगुरु मिलेगा तो आत्मा को सुहाग देगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

हरि की नार सदा सुहागन, रांड न मैले वेसा।

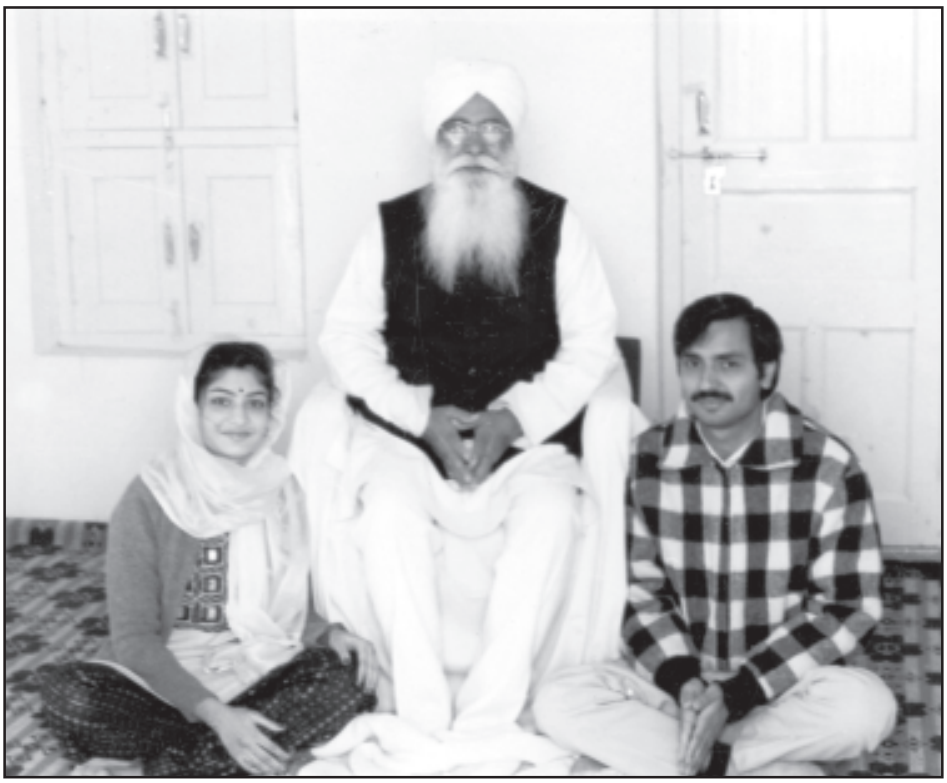

आत्मा 'शब्द' के साथ जुड़कर सुहागन हो जाती है। सन्त आत्मा को 'शब्द' के साथ इस तरह जोड़ देते हैं कि बिछोड़ा हो ही नहीं सकता अगर सेवक जोर भी लगाए तो वह उसे तोड़ नहीं सकता। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

तोड़ी न टूटे छोड़ी न छूटे, ऐसी माधो खिच तणी।

हम लोग कई बार सुख में परमात्मा को भूल जाते हैं। जब दुःख आता है फिर 'शब्द-नाम' की कमाई की तरफ लग जाते हैं। यह आत्मा जब से परमात्मा से बिछुड़ी है दुःखी है। आत्मा 'शब्द' के साथ जुड़कर ही सुहागन हो सकती है।

भाई रे अवरु नाही मै थाउ॥ भाई रे अवरु नाही मै थाउ॥

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''मुझे गुरु के बिना और कुछ दिखता ही नहीं। जो कुछ है गुरु ही गुरु है। मेरी जुबान पर गुरु का नाम चढ़ा हुआ है और मेरी आँखों में गुरु की तस्वीर बनी हुई है। मैं चलता-फिरता, उठता-बैठता और सोता-जागता हूँ तो भी गुरु ही गुरु है।''

मै धनु नामु निधानु है गुरि दीआ बलि जाउ॥

अगर हमारी फसल खराब हो जाए ! व्यापार में घाटा पड़ जाए ! हम रोते-कुरलाते हैं। हमने जो कर्म कमाया है वह अवश्य मिलेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मेरे पास सच्चा खजाना 'नाम' है अगर मैं इस खजाने को संगत में भी बाटूँ तो यह कम नहीं होता बढ़ता ही जाता है। यह 'नाम' का खजाना मुझे अपने गुरु से मिला है इसलिए मैं अपने गुरु का धन्यवाद करता हूँ, उसपर बलिहार जाता हूँ।''

वही सच्चा धन्यवाद करेगा और गुरु की याद में रोएगा जिसने गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लिया। संगत में ऐसे भी भाग्यशाली हैं जो मेरे पास भजन की ही बात करते हैं, भजन की भीख माँगते हैं। ज्यादातर प्रेमी तो दुनियावी बातें करते हैं। आप लोग बहुत पैसा खर्च करके यहाँ आते हैं ये रोने तो आप अपने घरों में भी रो सकते हैं।

गुरमति पति साबासि तिसु तिस कै संगि मिलाउ॥

अब आप परमात्मा के आगे फरियाद करते हैं कि दरबार में उसी की पत सच्ची है जिसे **पूर्ण गुरु** मिलता है। हिन्दुस्तान में रिवाज है कि पिता की जायदाद बेटे को मिलती है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

साहब जिसदा भुखा नंगा होवे, तिसदा नफर कित्थों रज खाए।
साहब घर वथ होवे नफर हथ आए, अन्होंदी कित्थों पाए॥

आप कहते हैं, ''सोच-समझकर गुरु धारण करें। गुरु की सबसे बड़ी निशानी है कि वह खुद 'शब्द-नाम' की कमाई करता है और शिष्यों को भी उसी तरफ लगाता है। वह खुद पवित्र बर्तन होता है और

हमें भी पवित्र बनने की हिदायत करता है।'' प्यारेयो ! नेक कमाई से अपना गुजारा करें; हम जब तक नेक कमाई करके नहीं खाएंगे तब तक हमारी आत्मा पर अच्छा असर नहीं होगा।

गुरुमुख गुरु से मिलकर गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं। जो **पूर्ण गुरु** से मिलकर उसके कहे मुताबिक चलते हैं वे इस तरह हैं जैसे काठ के साथ लगकर हजारों मन लोहा तर जाता है।

तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु नावै मरि जाउ॥

दिन-रात परमात्मा के आगे फरियाद की तो मुझे **पूर्ण गुरु** मिला। मैं भी उसके दर पर पहुँच सका। जब तक गुरु के दर्शन नहीं होते मेरा तन टूटता है और मन में उतावलापन होता है। अगर हमारे दिल में गुरु के लिए प्यार है तो हम फौरन 'शब्द' के साथ जुड़ जाएंगे।

गुरु मिले जब धुन का भेदी, शिष्य बिरह धर आई।
सुरत शब्द की होए कमाई, तब कुछ पंथ चलाई॥

अगर प्यासे को पानी दें तो वह पानी कद्र से पिएगा। यह नहीं पूछेगा कि पानी हिन्दू का है या मुसलमान का है? हमारे सतगुरु महाराज कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का असूल है जरूर देती है।'' हमें तो दुनिया के विषय-विकारों की भूख है।

अगर शिष्य के अंदर तड़फ हो ! गुरु से मिलने की भूख हो तो गुरु बिना बुलाए ही आ जाएगा। गुरु ही शिष्य को ढूंढता है। महाराज सावन सिंह जी बाबा जयमल सिंह के आश्रम से पाँच सौ किलोमीटर की दूरी पर थे। बाबा जयमल सिंह जी ने खुद जाकर सावन सिंह जी को ढूंढा। इसी तरह महाराज कृपाल सीमाप्रान्त के इलाके में थे। महाराज सावन सिंह जी उनके अंदर आने लगे।

मैं अपने मुत्तलिक बताया करता हूँ कि मैंने महाराज कृपाल का नाम तक नहीं सुना था। मैंने सिक्ख इतिहास पढ़ा है। बचपन से ही मेरे

दिल में ये बुलबुले उठते थे कि वे जीव कैसे थे जिन्हें जीवित महापुरुष मिले? कुछ ऐसे भी भाग्यहीन जीव थे जिन्होंने गुरु को बेदावा लिखकर दे दिया। मैं यह सोचता अगर मुझे गुरु मिला तो मैं ऐसा नहीं करूँगा।

यहाँ से पाँच सौ किलोमीटर की दूरी पर महाराज कृपाल को मेरा नाम किसने बताया? जब आप मेरे घर आए आपने मेरी जमीन और घर-बार देखकर कहा, ''मैं यह सब देखकर बहुत खुश हूँ लेकिन तू यह जगह छोड़कर और जानवर लोगों की लड़कियों को देकर यहाँ से चला जा।'' मैं अपनी पगड़ी सिर पर पहनने लगा तो आपने मुझे पगड़ी भी नहीं पहनने दी। आपने मुझे 16 पी.एस. जाने का हुक्म दिया, मैं दिन छिपने से पहले यहाँ पहुँच गया।

यह मामला गुरु और शिष्य का होता है। गुरु अपनी तारीफ नहीं करने देता, वह तारीफ से ऊपर होता है। वह अंतरर्यामी होता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो पहाड़ की चोटी पर खड़ा है वह जानता है कि आग कहाँ लगी है?'' गुरु जानता है कि कौन दिन-रात मेरी याद में तड़फ रहा है। ऐसे शिष्य का गुरु के साथ मिलाप इस तरह है जैसे खुष्क बारूद को अग्नि के नज़दीक कर दें लेकिन हम लोग गीले बारूद हैं हमें जैसे-जैसे 'शब्द' की तपिश और सतसंग का पानी मिलता है एक दिन हम भी सूखे बारूद बन जाते हैं।

मैं अंधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मैं अंधा हूँ। गुरु ने कृपा करके मुझे 'नाम' दिया। 'नाम' ने छड़ी का काम किया। जैसे अंधा आदमी छड़ी के सहारे ऊँची नीची जगह देख लेता है।'' नामदेव जी कहते हैं, ''मैं एक अंधा जीव हूँ गुरु ने मेरे हाथ में 'नाम' की छड़ी दी जिसके सहारे मैं अपने घर पहुँच गया हूँ।''

गुरु जिना का अंधुला चेले नाही ठाऊ॥

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सच्चाई लिहाज नहीं करती। शिष्यों को गुरु की ही रूहानियत मिलती है। आप अंधे के सहारे पार नहीं हो सकते क्योंकि वह खुद ही गिरता पड़ता है। जो गुरु खुद सच्चखंड नहीं पहुँचा उसके शिष्य कैसे सच्चखंड पहुँचेंगे?''

मैं हमेशा बताया करता हूँ कि गुरु धारण करने से पहले महात्मा की हिस्ट्री देखें ! क्या उसने दस-बीस साल भजन-अभ्यास किया है? क्या कोई कुर्बानी की है? ढोंगी के पीछे लगने से क्या मिलेगा?

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''प्यारेयो ! **गुरु पूर्ण** होना चाहिए। गुरु शब्द-अभ्यासी होना चाहिए और सेवक को भी अभ्यास में बिठाने वाला होना चाहिए। ऐसा गुरु सेवकों की गिनती नहीं बढ़ाता।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ज्यादा भीड़ का यह सबूत नहीं कि यह **पूर्ण गुरु** है। पूर्ण गुरु कभी भी अपने गुणों की नुमाइश नहीं करता, इश्तेहारबाजी नहीं करता।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर हमारे पास थोड़े से पैसे हों तो हम उन्हें सम्भालकर रखते हैं। जिस 'नाम' की इतनी शोहरत है क्या वह सस्ता है? सन्त-महात्मा मक्खियों को दूर करने के लिए कोई ऐसा काम कर देते हैं कि लोग सारी जिंदगी नहीं भूलते। केवल प्रेमी ही नज़दीक रह जाते हैं बाकी दूर हो जाते हैं।'' स्वामी जी ने कहा है:

निन्दया चौंकीदार बिठाई, कोई जीव घुसने न पाई।

सन्त प्रेमियों के लिए लंगर चलाते हैं कि लोग दूर-दूर से आते हैं उनके लिए खाने का इंतजाम जरूरी होता है। आगरा शहर के लोग लंगर में खाना भी खा जाते और मजाक भी उड़ा जाते। प्रेमी लोग सारा दिन लंगर तैयार करने में ही लगे रहते। एक दिन स्वामी जी ने सोचा ! इन मक्खियों को कैसे दूर किया जाए? स्वामी जी ने मुँह में पानी भरकर लंगर पर कुरली कर दी। वहाँ एकदम सन्नाटा छा गया। स्वामी जी को चोला छोड़े हुए सौ साल हो गए हैं लेकिन अभी तक लोग इस बात की निन्दा करते हैं।

मैंने शुरू में माँझूवास में सतसंग किया। वहाँ के चौधरी मेरे अच्छे प्रेमी हैं। उन प्रेमियों ने बात बनाई कि आखिरी दिनों में इनके गुरु कृपाल को बहुत खाँसी थी, वह अपने पास एक थूकदान रखते थे। इनका गुरु इन्हें अपनी थूक दे गया है, जिसे यह लंगर में डाल देते हैं। चौधरियों ने मुझसे पूछा, ''हमें एक शंका है क्या आप लंगर में थूक डालते हैं; क्या आपने वह थूक वाली डब्बी सम्भालकर रखी हुई है?''

मैंने उन चौधरियों को प्यार से महाराज सावन सिंह जी की कहानी बताई कि एक बार महाराज सावन सिंह जी शिमला में सतसंग कर रहे थे। वहाँ दो-चार रईस जेन्टलमैन सतसंग सुनकर बहुत खुश हुए। जब प्रशाद बाँटने लगे तो उन्होंने पूछा, ''यह प्रशाद सुच्चा है या जूठा है?'' महाराज जी ने कहा, ''सुच्चा भी है और जूठा भी है।'' उन जेन्टलमैनों ने कहा, ''दो बातें नहीं हो सकती।'' महाराज जी ने कहा, ''दोनों बातें हो सकती हैं। हम अरदास करते हुए कहते हैं कि हे परमात्मा ! तुझे भोग लगे, यह प्रशाद तेरी रसना लायक हो और हम साध संगत में तेरा प्रशाद बाँटें। भोग लग गया तो वह जूठा हो गया अगर भोग नहीं लगा तो प्रशाद सुच्चा ही रहा।''

महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''प्यारेयो ! यहाँ संगत में मेरे लड़के भी बैठे हैं। मैंने अपनी सारी जिंदगी में कभी किसी को अपने साथ खाना नहीं खिलाया। जो महात्मा दिन-रात 'शब्द-नाम' की कमाई करता है क्या वह किसी को अपने साथ खाना खिलाएगा? क्या वह अन्न पर थूकेगा? क्या उसकी कमाई खराब नहीं जाएगी? महात्मा ने तो अपनी कमाई को ताले लगाकर रखे होते हैं।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''इत्तर बेचने वाला चाहे शीशी को कितने भी ढक्कन लगा ले फिर भी प्रेमियों को खुशबू आ ही जाती है। वही खुशबू उनको जंगलों में जाकर ढूंढ लेती है।''

वे चौधरी हमेशा ही आते हैं और हँसते हुए कहते हैं कि अगर आपसे बात न करते तो हम रह जाते। मेरे कहने का भाव कि सन्त

इश्तेहारबाजी की बजाय ऐसी बात कर देते हैं कि लोग सारी जिंदगी निन्दा करते रहते हैं। ऐसे लोग एक-दूसरे से कहते हैं, ''मैं वहाँ इसलिए नहीं जाता क्योंकि वे कोई उपदेश नहीं देते, भगवान को भी नहीं मानते।'' अगर सन्त ही भगवान को नहीं मानेंगे तो और कौन मानेगा?

सबसे पहले **पूर्ण गुरु** की खोज करें। 'नाम' लेने के बाद हमें इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए। ऐसा नहीं कि गंगा गए तो गंगाराम जमना गए तो जमनादास। आपका गुरु पूर्ण है। आपको उस पर भरोसा है। आपने 'नाम' ले लिया है; आप 'नाम' की कमाई करें। 'नाम' लेकर इधर-उधर भटकना, खोज करना महापाप है।

इस बार साँपला में पश्चिमी प्रेमियों ने सवाल किया, ''गुरु शिष्य की आत्मा को कैसे लेकर जाता है?'' वहाँ दो प्रेमी-माईकल और शैली आश्रम की दीवार के साथ-साथ टहल रहे थे। माईकल आगे-आगे और शैली धीरे-धीरे उसके पीछे चल रही थी। मैंने उन्हें यह उदाहरण देकर समझाया कि जब हम रूहानी चढ़ाई चढ़ते हैं तो हर मंडल पर गुरु आगे और आत्मा पीछे होती है।

हमारा प्रिन्सीपल कैन्ट अच्छा पढ़ा-लिखा और समझदार आदमी है। जब मैं साँपला से वापिस चलने लगा तो उसने एक कार्टून बनाकर मुझे दिखाते हुए कहा, ''मैंने माईकल और शैली बना दी है यह आत्मा और यह 'शब्द' है। मैंने इन्हें आपके पीछे लगा दिया है।''

अगर आपका गुरु सच्चखंड जाता है तो आपको साथ लेकर जाएगा। आप उसके पीछे ही चलेंगे। गुरु ही आपको रास्ता तय करवाएगा।

भूले सिक्ख गुरु समझाए, औजड़ जान्दे मार्ग पाए।

हम दुनिया के जंगल मे भूले हुए हैं। विषय-विकारों में फँसे हुए हैं तभी तो यहाँ बैठे हैं। हमने अंदर कुछ देखा ही नहीं इसलिए अंदर पग-पग पर भूलते हैं।

बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बिनु नावै किआ सुआउ॥

पूर्ण गुरु 'नाम' जपकर नाम-रूप हो जाता है। पूर्ण गुरु के बिना 'नाम' नहीं मिलता। दुनिया में 'नाम' के बराबर कोई लज़्ज़त नहीं।

आइ गइआ पछुतावणा जिउ सुंञै घरि काउ॥

हमें इन्सान का जामा मिल गया है अगर पूर्ण गुरु न मिला, पूर्ण 'नाम' न मिला तो यह इन्सानी जामा किसी लेखे में नहीं। यहाँ से हम ऐसे चले जाएंगे जैसे सूने घर में से कौआ टांय-टांय करके चला जाता है। इसी तरह हम कभी सुख में कभी दुःख में अपनी जिंदगी व्यतीत कर लेते हैं। काल हमें हमारे कर्मों के मुताबिक फिर जन्म दे देता है।''

बिनु नावै दुखु देहुरी जिउ कलर की भीति॥

आप कहते हैं, ''नाम के बिना हम मन से भी दुःखी हैं, तन से भी दुःखी हैं। आत्मा तन के पिंजरे में रहती है। तन को दुःख ऐसे खा जाते हैं जैसे कल्लर की दीवार भुर-भुर कर गिर जाती है।''

तबलगु महलु न पाईऐ जबलगु साचु न चीति॥

हम जब तक **पूर्ण गुरु** के 'नाम' की कमाई नहीं करते तब तक सच्चखंड नहीं पहुँच सकते।

सबदि रपै घरु पाईऐ निरबाणी पदु नीति॥

आप कहते हैं, ''सतसंग सुनकर हम कुछ न कुछ तो छोड़ते ही हैं। दुनिया के रंग उतर जाते हैं, 'शब्द-नाम' का रंग चढ़ जाता है। **पूर्ण गुरु** नामदान के समय हमें समझाते हैं कि सतसंग में हाजिरी लगानी है। सतसंग में हमें अपनी गलतियों का पता लगता है फिर हम अपनी गलतियों को सुधारने का उपाय भी करते हैं। जैसे कोई मैले कपड़े को अपने बैग में नहीं रखता वैसे गुरु भी मैली आत्मा को नहीं खींचता।''

हम कहते हैं, ''महाराज जी ! हमारा पर्दा खोलें। हमारी आत्मा को खींचे।'' सोचकर देखें ! अगर गुरु मैली आत्मा को खींचेगा तो आत्मा को बहुत तकलीफ होगी; जैसे मैला कपड़ा दूसरे कपड़ों को भी मैला कर देता है।

महाराज कृपाल बहुत प्यार से समझाया करते थे, ''जैसे रेशम का कपड़ा काँटों वाली झाड़ी पर पड़ा है, हम उसे जोर से खींचेगे तो वह कपड़ा फट जाएगा अगर हम उसे धीरे-धीरे खीचेंगे तो वह बच जाएगा। हमारी आत्मा की यही हालत है।''

हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछि कार कमाउ॥
सबदि सलाही मनि वसै हउमै दुखु जलि जाउ॥

गुरु जो कहता है वह करें लेकिन हम गुरु के आगे अपनी दलीलें पेश करते हैं। उस जगह नहीं पहुँचते जहाँ गुरु जवाब देता है।''

अगर हम स्थूल रूप में हैं तो गुरु भी स्थूल रूप में सतसंग के जरिए हमारे सवालों का जवाब देता है। बहुत से प्रेमी कहते हैं, ''हमने जो बात पूछनी थी उसका जवाब हमें सतसंग में ही मिल गया।'' जब हम स्थूल छोड़कर सूक्ष्म में जाते हैं तो गुरु भी सूक्ष्म रूप धारण कर लेता है। जब हम कारण में जाते हैं तो गुरु भी कारण रूप धारण कर लेता है और जब हम पारब्रह्म में जाते हैं तब गुरु 'सार-शब्द' है। उस समय केवल शुक्राना ही रह जाता है अगर वह देह धारकर न आता तो हमें 'शब्द' के साथ कौन जोड़ता? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मैं देख देख न रज्जा गुरु सतगुरु देहा।

जो अंदर पहुँच जाता है वह देह से भी प्यार करता है। अंदर शब्द-गुरु को देखता है और दिन-रात गुरु की तारीफ करता है कि तू हमारे लिए एक छोटा सा इंसान बनकर इस संसार में आया; तू धन्य है।

आप रानी इन्द्रमति की कहानी पढ़ते हैं। जब वह सच्चखंड पहुँची तो उसने कबीर साहब से कहा, ''आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि आप सतपुरुष हैं?'' कबीर साहब ने कहा, ''क्या तू मान लेती कि एक जुलाहा सतपुरुष हो सकता है?''

सहज होइ मिलावड़ा साचे साचि मिलाउ॥

आत्मा बूँद और परमात्मा सागर है। जब बूँद पानी में मिल जाती है तो उसे पहचान नहीं सकते। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

ज्यों जल में जल आए खटाना, त्यों ज्योति संग मिल ज्योत समाना॥

हमारी छोटी ज्योत आत्मा, परम ज्योति में जाकर मिल जाती है। तब इन दो दीपकों का प्रकाश एक हो जाता है। इस तरह आत्मा और परमात्मा की पहचान नहीं हो सकती; आत्मा 'शब्द' में समा जाती है फिर उसी का गुणगान करती है।

बुल्लेशाह ने हीर और रान्झा की मिसाल देकर समझाया है। उसने 'शब्द' को रान्झा और 'आत्मा' को हीर कहा है। हीर सखियों से पूछती है, ''कहीं हीर को देखा है?'' सखियाँ कहती हैं कि तू कौन है? तू ही तो हीर है। हीर अपने आपको भूल गई थी। वह कहती है:

रान्झा रान्झा करदी नी, मैं आपे रान्झा होई।
सद्दो नी मैंनू धीदो रान्झा, हीर न आखो कोई॥

आत्मा फिर आत्मा नहीं रहती, 'शब्द' के साथ मिलकर परमात्मा बन जाती है।

महाराज सावन एक मिसाल दिया करते थे कि महात्मा एक जमींदार को 'नाम' के बारे में समझाने लगे तो जमींदार ने कहा कि 'नाम' मेरी जुबान पर नहीं चढ़ रहा, मुझे दुनिया का ही ध्यान आता है। महात्मा ने जमींदार से पूछा, ''तुझे किसके साथ ज्यादा प्यार है?'' जमींदार ने कहा, ''मैंने भैंस के बच्चे का पालन किया था। वह अब बड़ा हो गया है मेरा उसके साथ बहुत लगाव है।'' महात्मा ने कहा, ''हम कुछ दिनों के बाद आएंगे, तू अंदर बैठकर भैंस के बच्चे का ध्यान लगा।''

आप जानते हैं कि जिसके साथ प्यार हो उसका ध्यान लगाना मुश्किल नहीं होता। थोड़े समय में ही उस जमींदार का ध्यान पक गया। कुछ दिनों बाद महात्मा ने आकर कहा, ''प्यारेया ! तू बाहर आ तुझे कुछ और समझाएं।'' जमींदार ने कहा कि मैं बाहर कैसे आऊँ क्योंकि दरवाजा छोटा और मेरे सींग बड़े हैं। महात्मा ने कहा, ''तू कौन है?''

जमींदार ने कहा, ''मैं भैंस हूँ।'' महात्मा ने उसकी तरफ तवज्जो देकर कहा, ''तू इंसान है।'' ये सब ध्यान की ही करामात है।

अगर हम अच्छे आदमी के गुण धारण करें उसके स्वरूप का ध्यान करें तो उसकी सारी अच्छाइयाँ हमारे अंदर आ जाएंगी अगर हम बुरे आदमी का ध्यान करेंगे तो उसके ऐब हमारे अंदर आ जाएंगे।

सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु॥

निरमलों का भी एक समाज है। मुझे भी इस समाज वालों से मिलने का मौका मिला है। वे जब बानी पढ़ते तो मेल नहीं खाता था। मैंने कहा कि वे निरमले हैं जो 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं। संन्यासियों का भी एक पंथ है। दसवें द्वार में पहुँचकर सन्यासी बनता है वहाँ आशा तृष्णा सुन्न हो जाती हैं केवल परमात्मा ही रह जाता है। हम सन्यासी तो बनते नहीं लेकिन सन्यासी होने का अहंकार हो जाता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''निरमले वे हैं जो 'शब्द' में समा जाते हैं अगर कोई काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से बचा हुआ निरमला मिले तो हम उसके पैर पकड़ने के लिए तैयार हैं।''

नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उरधारि॥

आप प्यार से कहते हैं, ''जो उठते-बैठते 'नाम' की कमाई करते हैं। 'नाम' की महिमा गाते हैं वे अपने सेवकों को भी 'नाम' की महिमा गाने में लगा देते हैं। अपने अंदर गुरु को बसा लेते हैं। उनका आधार गुरु ही होता है।''

सो किउ मनहु विसारीऐ सभ जीआ का आधारु॥

ऐसा गुरु परमात्मा हम सबको आधार दे रहा है। हम उसको उतनी देर ही भूल सकते हैं जब तक अंदर जाकर सच्चाई को नहीं देख लेते। वह हमारी आत्मा की खातिर अपना घर छोड़कर बीमारियों का चोला धारण करके आता है।

सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार॥

आप कहते हैं, ''जो 'शब्द-नाम' की कमाई करके शब्द में जज्ब हो जाते हैं, वे एक बार मरकर जीवित हो जाते हैं। उन्हें बार-बार इस संसार में आकर जन्म-मरण का कष्ट नहीं उठाना पड़ता।'' हमारी यह हालत है कि जन्म होता है और मौत आँखों के आगे आ जाती है। अभी उससे छुटकारा नहीं हुआ होता कि हमारे कर्मों के मुताबिक अगला कलबूत तैयार होता है। जिसे दस नम्बरी की तरह हथकड़ी लगी रहे और नित्य धर्मराज के पास पेशी हो उसकी क्या इज्ज़त है? हम जहाँ भी जाते हैं वहाँ तन और मन का पिंजरा है। कबीर साहब कहते हैंः

तन धर सुखिया कोई न देखया, जो देखया सो दुखिया।

चाहे यहाँ कोई ब्रह्मा के तन में आया चाहे कोई विष्णु के तन में आया हर किसी को कष्ट भोगना ही पड़ा। रामचन्द्र, कृष्ण त्रिलोकी के नाथ थे उन्हें भी बहुत कष्ट उठाने पड़े। चाहे राजा है चाहे प्रजा है जो भी तन धारण करके आया उसे बीमारी, बेरोजगारी और मुसीबतें भोगनी पड़ी। जो एक बार 'शब्द' में जज्ब हो जाता है उसे यहाँ बार-बार चक्कर नहीं लगाने पड़ते।

सबदै ही ते पाईऐ हरिनामे लगै पिआरु॥

परमात्मा जप-तप, पूजा-पाठ, जंगलों-पहाड़ों में जाने से या सफेद, नीले, भगवे कपड़े पहनने से नहीं मिलता। परमात्मा को प्राप्त करने का साधन सिर्फ 'शब्द-नाम' की कमाई ही है। गुरु नानक कहते हैंः

कोई पहने नील, कोई पहने सफेद।

बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारो वार॥

आप प्यार से कहते हैं, ''जब तक 'शब्द-नाम' नहीं मिलता तब तक हम भूल में हैं। अंत समय में दान-पुण्य, पढ़-पढ़ाई किसी काम नहीं आते।'' कबीर साहब अपनी बानी में मिसाल देकर समझाते हैं,

''जिस तरह मायके में बैठी औरत अपने पति के संदेश का इंतजार करती है इसी तरह 'शब्द' से जुड़ी हुई आत्मा परमात्मा के संदेश का इंतजार करती है।''

हम जिन लोगों के कहने पर जप-तप, पूजा-पाठ करते हैं वे हमें यह भरोसा देते हैं कि मरने के बाद हमें स्वर्ग मिलेंगे। हमारे दिल में यह ख्याल होता है कि हमें स्वर्ग मिलेंगे तो हम आत्मघात की सोचते हैं कि आगे छुटकारा मिल जाएगा !

पति परमात्मा डोली लेकर नहीं आता, यम के चार कुहार लेने आ जाते हैं। कुहारों को देखकर आत्मा हैरान हो जाती है कि मुझे तो भरोसा दिलवाया गया था कि स्वर्ग-बैकुंठ मिलेंगे लेकिन यहाँ मुझे अपना कोई सज्जन भाई-बहन दिखाई नहीं दे रहा। आत्मा यमों के आगे मिन्नतें करती है कि मेरी डोली वापिस ले चलो मैं अपने भाई-बहन सखियों से मिलना चाहती हूँ लेकिन फिर कौन वापिस लाता है?

पूर्ण गुरु ऐसे वायदे नहीं करता। गुरु कहता है, ''शब्द-नाम की कमाई करोगे तो मैं तुम्हें लेने आऊँगा।'' हम जिंदगी में ऐसे अनेकों ही वाक्य देखते हैं कि जिन प्रेमियों ने घर का अच्छा वातावरण बनाया होता है वे मौत से कई दिन पहले ही बता देते हैं कि गुरु आए हैं।

अगर हमारे घर का वातावरण ठीक नहीं या मौत के समय वहाँ कोई गैर सतसंगी बैठा है तो वह बिना बताए ही चला जाएगा अगर गुरु बाहर मौज नहीं बरताता तो स्थूल शरीर छोड़ने पर अंड में आत्मा की सम्भाल करता है। गुरु ने जिसे 'नाम' दिया है उसे कभी काल के हवाले नहीं होने देता। अगर फिर काल के हवाले होता है तो ऐसे गुरु को मानने का क्या फायदा? शेर की शरण में गीदड़ तंग करे तो शेर की शरण का क्या फायदा? गुरु अपना वायदा निभाता है। सेवक का धर्म है वह अपने जीवन को पवित्र बनाए, रोजाना 'शब्द-नाम' की कमाई करे।

अगर सेवक अपनी जिंदगी न सुधारे, शराबों-कबाबों में लगा रहे और अंत समय में गुरु का इंतजार करे तो वह भूल में है क्योंकि गुरु ने उससे कोई मुआवजा नहीं लिया। गुरु फिर भी दयावान है, मुफ्त का सेवादार है; सतसंगी के हर जीव-जन्तु की सम्भाल करता है। गुरु दया का रूप होता है उसके अंदर दया ही प्रगट होती है।

सभ सालाहै आप कउ वडहु वडेरी होइ॥

आप प्यार से कहते हैं, ''दुनिया में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई चारों वर्ण आ जाते हैं। सभी समाज अपने आपको बड़ा समझते हैं और अपने-अपने रीति-रिवाजों की तारीफ करते हुए कहते हैं कि हमारे तरीके से भक्ति करने पर ही परमात्मा मिलेगा।''

आप मिसाल देकर समझाते हैं अगर हम हाथी की निन्दा करें कि वह हाथी नहीं गधा है तो वह गधा नहीं बन जाएगा, हाथी ही रहेगा अगर गधे की महिमा गाने लग जाएं कि यह बहुत अच्छा है लेकिन वह गधा ही रहेगा। हमारी भी यही हालत है अगर दस आदमी मिलकर सोसाइटी बना लें और कहें कि यह बहुत बड़ा महात्मा है और इस आडम्बर को देखकर हम उनके सेवक बन जाएं तो वह महात्मा नहीं बन जाएगा। हीरे का मूल्य जौहरी ही जानते हैं।

गुर बिनु आपु न चीनीऐ कहे सुणे किआ होइ॥

गुरु साहब कहते हैं, ''नाम की कमाई के बिना हमारी आत्मा अंदर शब्द के साथ जुड़ ही नहीं सकती।'' पलटू साहब कहते हैंः

फूटी आँख विवेक की, दिखे न सन्त असन्त।
जाँके संग दस बीस हैं, तिसका नाम महन्त॥

अगर दस आदमी तारीफ करने लग जाएं तो हम उनके प्रभाव में आ जाते हैं; इसमें उनका नहीं हमारा दोष है कि हम समझ से काम नहीं लेते। सन्त 'नाम' की कमाई करते हैं किसी से ईर्ष्या नहीं करते।

नानक सबदि पछाणीऐ हउमै करै न कोइ॥

गुरु साहब ने शुरू में ही कहा था कि ऐ प्यारे भूले मन ! तू क्यों इस दुनिया के विषय-विकारों में बाँवरा हुआ फिर रहा है? तू **पूर्ण गुरु** के चरणों में पहुँच। गुरु जो कहता है तू वह कर। तू यमों से क्यों डरता है? अगर यमों को डराना चाहता है तो **पूर्ण गुरु** की शरण ले।

अगर हम एक बार 'शब्द-नाम' की कमाई करके जीते जी मर जाते हैं तो बार-बार जन्म-मरण के दुःख से बच जाते हैं। आखिर में गुरु साहब फिर कहते हैं, ''प्यारेयो ! 'शब्द-नाम' की कमाई करो, आपका जीवन अमूल्य है।'' एक बार मौका हाथ से निकल गया तो यह तोहफा नहीं मिलेगा। हमें विचार नहीं करते रहना चाहिए।

हमें परमात्मा कृपाल ने जो समय दिया है उसका फायदा उठाएं। 'शब्द- नाम' की कमाई करें, अपने जीवन को सफल बनाएं।

U U U

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

स्वप्न

15 नवम्बर 1992

एक प्रेमी:- बाबा जी! मैंने यह सुना है अगर हम अभ्यास के बाद सो जाएं ! क्या हम अपना अभ्यास खो देते हैं?

बाबा जी:- हाँ भाई ! सन्त हमें 'नामदान' देते हैं। 'नामदान' की महानता को समझना बहुत जरूरी है। हम जन्म-जन्मांतरों से अंदर और बाहर से सोए हुए हैं। जब हमें 'नामदान' मिलता है उस समय हममें बहुत प्यार, श्रद्धा और उत्साह होता है।

अगर हम जल्दी से जल्दी सिमरन के द्वारा नौं द्वारे खाली करके बाहर से फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाकर सूरज, चन्द्रमा और सितारे पार कर लें तो हमारी आत्मा में जागृति आ जाएगी। फिर हमारा शरीर सोएगा आत्मा नहीं सोएगी, क्योंकि हमारी आत्मा तीसरे तिल पर जागृत अवस्था में है। जब हम गहरी नींद में होते हैं तो हमारी आत्मा कंठ में आती है। जब और गहरी नींद में होते हैं तो यह आत्मा नाभि में आती है; नाभि में पहुँचकर यह अपनी याददाश्त खो देती है। फिर हमें **स्वप्न** आने शुरू होते हैं, कई बार तो डरावने **स्वप्न** भी आते हैं। जब अभ्यासी डरावने **स्वप्नों** को देखकर उठता है तो उसका दिल खराब हो जाता है।

अगर हम जागृत अवस्था में हों तो हमारी आत्मा कंठ और नाभि में नहीं जाएगी। हम भजन में तरक्की करेंगे। नींद आराम के लिए एक कुदरती साधन है। हमारी चढ़ाई ऊपर की तरफ है। जब हम सोते हैं तब हमारी आत्मा जागती है और ऊपर के मंडलों में सफर करती है। हमें अभ्यास के बाद सोना नहीं चाहिए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अभ्यासी बाहर से तो सोता हुआ नजर आता है लेकिन उसकी आत्मा जागृत होती है।'' कबीर साहब कहते हैं: ***सोवत में जागत।***

विरले ही जागते हैं। बाकी सारा संसार सोया होता है। हमारा अभ्यास नहीं बना होता, इसलिए जब हम सोते हैं तो हमारी आत्मा नाभि में पहुँच जाती है और हम बुरे **स्वप्न** देखते हैं। इस वजह से हमारा मन सारा दिन दुखी रहता है। हम सोचते हैं हमने जो भजन किया था वह खो गया है। ऐसी हालत उन लोगों की होती है जिन्होंने अभ्यास करके आत्मा को जागृत नहीं किया होता।

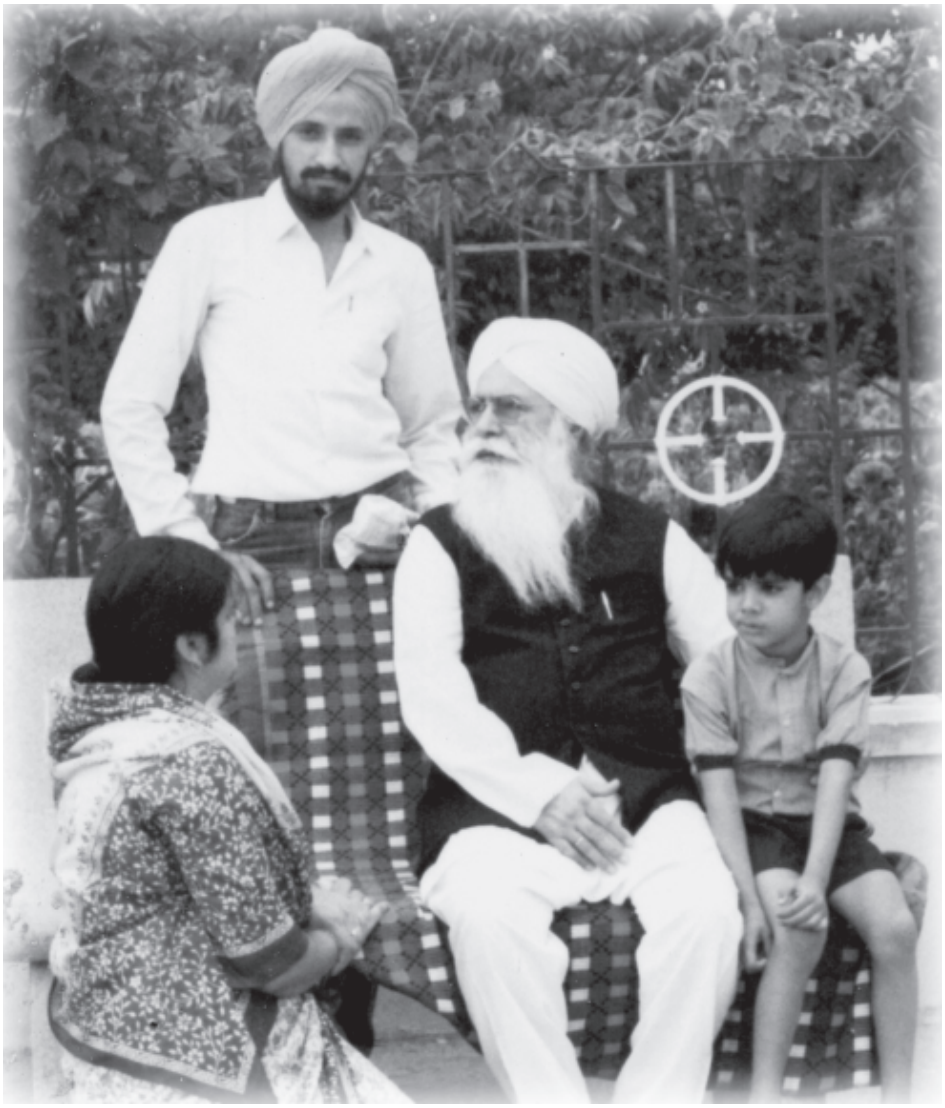

अगर सतसंगी को रोज तीसरे तिल पर जाने की आदत हो फिर वह अभ्यास के बाद सो भी जाता है तो उस समय सतगुरु अपनी प्यार भरी दृष्टि के साथ अपने प्यार की कुंडी से उसे ऊपर के मंडलों में खींच लेता है। कई दफा अभ्यासी **स्वप्न** में बड़े-बड़े नजारे देखता है। सतगुरु कई कर्म स्वप्नों के रास्ते ही भुगता देता है।

जिस दिन हमें अंदर सतगुरु का दर्शन होता है; उसे हम **स्वप्न** समझते हैं। हमारा दिल कई दिन खुश रहता है। हम सोचते हैं कि ऐसा **स्वप्न** हमें बार-बार आए जिसमें हम गुरु के दर्शन करें।

हमें दुनिया के **स्वप्न** इसलिए आते हैं क्योंकि सोते समय हमारी आत्मा नीचे नाभि चक्र में चली जाती है। शब्द-रूप सतगुरु आँखों से नीचे नहीं आता। वह जब भी **स्वप्न** में दिखाई देता है वह जगह तीसरा तिल है। इसलिए शब्द-रूप गुरु के स्वप्न बहुत कम आते हैं।

जब सतसंगी मुझे बताते हैं कि हमने **स्वप्न** में गुरु को देखा है। मैं उन्हें बताया करता हूँ कि यह स्वप्न नहीं सच्चाई है। आप अपने आप वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकते, गुरु ने दया करके आपकी आत्मा को वहाँ तक खींचा है।

मैं सावन सिंह जी महाराज के सेवकों से भी इसी तरह का काफी कुछ सुनता और देखता रहा हूँ। आपके सेवक कहते, ''आप पहले की तरह फिर अंदर आ जाओ।''

इसी तरह महाराज कृपाल के प्रेमियों के साथ ऐसी घटना घटती तो वे बहुत खुश होते कि उन्होंने नूरी स्वरूप देखा।

आज भी अनेक हिन्दुस्तानी और पश्चिमी प्रेमी कहते हैं कि आप फिर आएं। मैं उन्हें प्यार से कहता हूँ, ''आप इसे **स्वप्न** न समझें, अभ्यास करें। गुरु की याद दिल में बसाएं, आप दिल में जिसकी याद बसाएंगे वह जरूर आएगा।''

h c h

धन्य अजायब

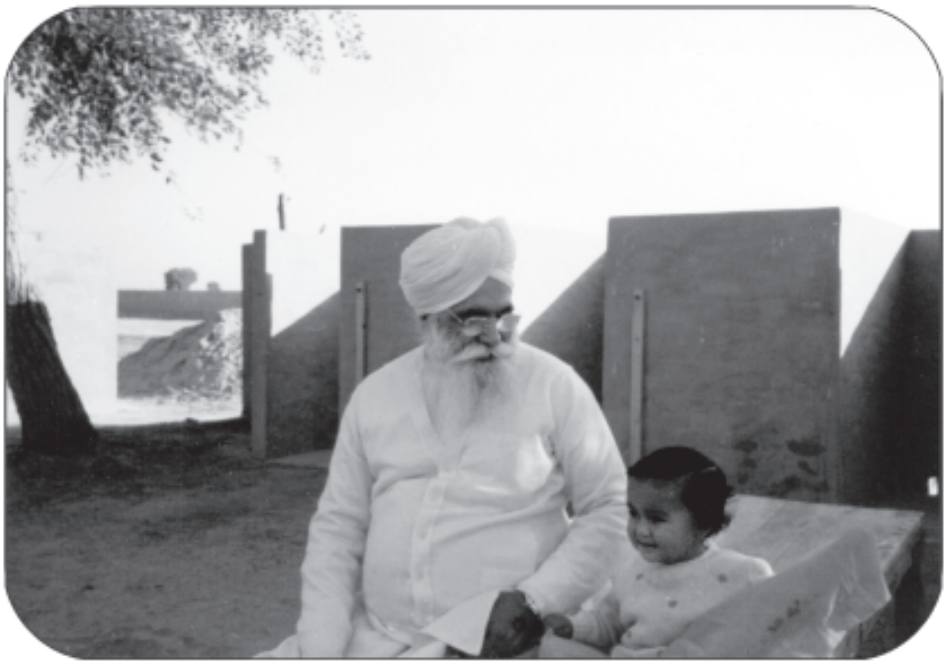

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम:

10 से 14 जनवरी – 2007
आरोग्य भूराभाई भवन,
शान्ति लाल मोदी मार्ग, (नज़दीक मयूर सिनेमा)
कांदिवली (पश्चिम), मुम्बई – 400 067
फोन – 022–22188353, 022–28628626

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंगों का कार्यक्रम:

2 फरवरी से 6 फरवरी	– 2007
2 मार्च से 4 मार्च	– 2007
31 मार्च से 2 अप्रैल	– 2007